DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3645

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय चित्रकथाओं (कॉमिक्स) में रंग सयोजन के ग्राफिक अभिप्राय

बृजेश कुमार, शोध छात्र
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवम कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

रंग संयोजन के आधार पर ग्राफिक अभिप्राय एक व्यवस्थित और प्रबन्धात्मक विचार धारा को कला की भाषा में संयोजन कहते है। जिसका विभिन्न समस्या अन्तराल और क्षेत्रों में विभाजित करने एंव रेखाओं, आकृतियों, वर्णो (रंगों), तानो तथा वयन आदि के चयन को व्यवस्थित करने से सम्बधित है।चित्रकथा (कॉमिक्स) में रंगों का सयोजन का इतिहास काफी पुराना रहा है। मानव ने जब सर्वप्रथम आँखे खोली तो वह प्राकृतिक वातावरण के बीच रहते हुए शिकार करके अपना पेट भरने लगा। परिणाम स्वरूप अपने प्राकृतिक वातावरण को देखकर उसने पत्थरों, चट्टानों, गुफाओं आदि की दीवारों पर कोयले, पत्थर तथा प्रकृति प्रद्दत रंगों को अपने संदेश सम्प्रेषित करने का माध्यम बनाया। चित्रकथा में प्रयुक्त सभी रंगों को चित्र बनाते समय उसके आकार और माध्यम का ज्ञान महत्वपूर्ण तथ्य है। समान प्रकाश छाया अथवा उष्णता कर शीतलता आदि के विचार से चित्रों में रगों का प्रयोग संयोजन उत्पन्न करता है। जो किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करने में एक महत्वपूर्ण योगदान रखते है। इलैस्ट्रेशन में रंगों के सयोजन को पसन्द करना सर्वविदित है। जिसमें यदि हम किसी शान्त सभा या शान्त रस प्रदर्शित दृश्य को चित्रण में श्वेत, नीले, भूरे अथवा पीले रंगों के विभिन्न मिश्रिणों का प्रयोग सुन्दर संयोजन शीतल वातावरण की सृष्टि करेगा। जबकि लाल नारंगी, पीले, बैगनी आदि रंगों द्वारा विशेष आलोकिक एंव उष्ण वातावरण का संयोजन प्रभाव उत्पन्न करेगा चित्रों में रंगो का प्रयोग उसकी सास्कृतिक पहचान उसकी स्थिति और प्रांसागिकता के अनुसार करना ज्यादा लाभदायक रहता है। जो किसी भी दृश्य के महत्व को ज्यादा और ज्यादा आकर्षक बनाता है।

रगों के ज्ञान हमारे दृश्यात्मक अनुभव का महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्ण की अनुमति व्यक्तिगत तत्व है जो मनुष्यों तथा पशुओं की इद्रिय रचना पर निर्भर है। विभिन्न परिस्थितियों में प्रकाश के साथ संयोजित स्थिति उत्पन्न करता है। जैसे– सावन के बुलबुलों में पानी में तैरते तेल में इत्यादि । विभिन्न स्थितियों में चित्रण में रगों का उपयोग करके उस दृश्य की प्रासागिकता बढ़ाई जाती है। विभिन्न स्थिति चित्रण जैसे– प्रसन्नातादायक तथा दिव्यता को दर्शाने के लिए चित्रण के साथ पीले रंग का संयोजन अधिक प्रभावशीलता दर्शाता है।उत्तेजक, क्रोध,वीरता, श्रृंगारिकता को चित्रण उपरान्त समक्ष मनोस्थिति अनुरूप लाल रंग का उपयोग कर आकर्षक बनाया जाता है।इसी प्रकार नीले, हरे बैगनी, श्वेत, काला क्रमशः स्थिति अनुरूप चित्रण उपरान्त रंग संयोजन से अधिक आकर्षक बनाये जाते है।

भारत में चित्रकथाओं का उद्भव भारतीय संस्कृति धर्म ज्ञान विकास के लिए किया गया था। इसमें सामान्यत धार्मिक तथा पौराणिक कहानियों को माध्यम से बच्चों को सांस्कृतिक तथा निडर बनाया था। विभिन्न प्रकार कि चित्रकथाओं में रंग के विभिन्न प्रयोग अनुरूप बच्चों की मानोदशा को ध्यान में रखते हुए आकर्षक रगों का प्रयोग किया गया।

(अ) रंग सयोजन अभिप्राय– षडग का विवेचन भारतीय चित्रकला–शास्त्रों में नही मिलता। वात्स्यायन कृत कामसूत्र नामक ग्रन्थ की एक टीका जयपुर निवासी यशोधर पंडित ने ग्यारहवी– बारहवी शताब्दी में लिखी थी। यशोधर पंडित ने कहा है कि आलेख चित्र को कहते है और उसके छः अंग है रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य योजना सादृश्य और वर्णिका भंग है।

जिसके अनुसार रगों के सयोजन को रूप भेद तथा वर्णिका भंग में विस्तृत रूप से समझाया गया है।

रूप भेद में विभिन्न रूप को उनके आधार विचार तथा मनोवृत्ति को दर्शाने वाला बताया गया है। जिसमें रगों के अनुसार रूप उज्जवल, श्याम, लाल, पीला, नारंगी आदि होता है।

चित्रकथाओं में विभिन्न रूप भेद के लिए उज्जवल रूपवान नायक को मानकर बनाया गया है श्याम, लाल को खलनायक तथा विभिन्न मुद्राओ तथा भाव के अनुसार उपयेाग किया गया है।

वर्णिका भंग चित्र– रचना की सामग्री एंव रंगों का निर्माण मिश्रण के नियम एंव चित्र– रचना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का प्रयोग वर्णिका भंग कहलाता है। नाट्यशास्त्र एंव चित्र सूत्र आदि में इन सबका विस्तार पूर्वक उल्लेख है।

चित्रकथाओं (कॉमिक्स) रंगो संयोजन प्रभाव :– चित्रकथाओं में चित्रण विधान के समस्त आलेखों उपरान्त किये गये सौन्दर्य चित्रण के अनुरूप माना गया है। विभिन्न वर्णों को उनके प्रभाव के अनुसार संयोजित कर रंगाकन किया गया है।पीले को प्रकाशयुक्त जो प्रसन्नतादायक तथा सूर्य, प्रकाश, दिव्यता यंश आदि का प्रतीक के रूप में उपयोग किया है।लाल उत्तेजक एंव आकर्षक है यह सक्रिस और आक्रामक है जबकि विरोधामान अनुरूप इसका प्रयोग वासना श्रृंगारिकता आदि प्रकट करने में भी होता है समयानुसार इनके प्रतीक बदलते है जैसे वेलेटाइन डे पर यह प्रेम का प्रतीक होता और युद्ध में आक्रामकता का प्रतीक होता है।नीला, हरा, बैगनी जो क्रमशः चित्र कथाओं में शान्त, मधुर अपरिपक्वता यौवन तथा राजसी रंग में उपयोग किया जाता है। श्वेत रंग शुद्धता मासूमियत और दूसरे अर्थ शोक में प्रतीक हो जाता है।चित्र कथाओं के चित्रण विधान में भारतीय षड़ग को रखते हुए कलात्मक ढंग से रंगो का प्रयोग किया जाता है जिस प्रकार उपयुक्त रंग योजना का प्रयोग किया गया है।

स्पांकन – *1) डा0 गिर्राज किशोर अग्रवाल संजय पब्लिकेशन आगरा 2) ग्राफिक डिजाइन – नरेन्द्र यादव*